20-03-07

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

अल्पविकसित देश को अविकसित देश से अर्थ से भिन्न किया जाता है। अल्पविकसित देशों में जहां विकास की भावी सम्भावनाएं नहीं होती हैं South Pole [illegible] देश के देशों में [illegible] विकास की [illegible] भारत चीन [illegible] [illegible] अल्पविकसित देश विकसित देशों की [illegible] विकसित होते हैं किन्तु समय के साथ इनके विकसित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होने की पूर्ण संभावना होती है। इस प्रकार जेकब वाइनर के अनुसार अल्पविकसित एक ऐसा देश है [illegible] प्रतिव्यक्ति आय विकसित देशों की तुलना में निम्न होती है किन्तु इन देशों में भावी विकास की प्रचुर संभावना होती है अर्थात पूर्व की तुलना में अधिक जनसंख्या का भरण-पोषण करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक श्रम, अधिक पूंजी या अधिक उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार सामान्यतः जहां अल्पविकसित एवं विकसित अर्थव्यवस्थाओं का अन्तर प्रतिव्यक्ति आय के रूप में विभिन्न अर्थशास्त्रियों के द्वारा परिभाषित किया गया है वहीं अल्पविकसित देशों के संदर्भ में जेकब वाइनर की परिभाषा प्रतिव्यक्ति आय तथा विकास संभावनाओं दोनों पर बल देती है जो कि आर्थिक विकास के दो निर्धारक हैं।

अल्पविकसित देशों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

सामान्य गरीबी :- अल्पविकसित देशों में गरीबी का स्तर उच्च होता है ऐसी अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन करने के लिए सापेक्ष गरीबी की तुलना में निरपेक्ष गरीबी अधिक महत्वपूर्ण होती है। अल्पविकसित देशों में निरपेक्ष गरीबी को सिर्फ निम्न आय के रूप में नहीं मापा जाता है बल्कि कुपोषण, स्वास्थ्य का निम्न स्तर, वस्त्र, आवास, शुद्ध पेयजल एवं शिक्षा का अभाव से भी मापा जाता है। इस आधार पर प्रो० गुन्नार मिर्डल ने अल्पविकसित देशों को [redacted] एक अनुमान के अनुसार विश्व की निरपेक्ष गरीबी [redacted] दक्षिण एशिया जिसमें भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश [redacted] ——— जिनमें अधिकतर इन्डोनेशिया में [redacted] तथा पीछे लैटिन अमेरिका, उत्तरी अफ्रीका तथा मध्य पूर्व में रहते हैं।

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था :- अल्पविकसित देशों की अधिकांश जनसंख्या (लगभग 70 से 80%) कृषि पर निर्भर करती है। इसके कारण में अल्पविकसित देशों के आय में अधिकांश हिस्सा कृषि क्षेत्र का होने के साथ इन अर्थव्यवस्थाओं की अधिकांश

श्रमशक्ति को रोजगार कृषि क्षेत्र मे ही प्राप्त होता है।

दोहरी अर्थव्यवस्था :- अल्पविकसित देशो की एक अन्य विशेषता दोहरी अर्थव्यवस्था के रूप मे देखी जाती है। दोहरी अर्थव्यवस्था से दोहरी अर्थव्यवस्था के रूप मे देखी जाती है। दोहरी अर्थव्यवस्था से तात्पर्य आधारित अर्थव्यवस्था के साथ-2 जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था का अस्तित्व मे होना है। इनमे से एक अर्थव्यवस्था जहा तकनीकि, सामाजिक एवं क्षेत्रगत वित्तीय सुविधाओ से युक्त है वही दूसरी ओर न्यूनतम दोहरी देशो के रूप मे देखी जाती है वही दूसरी ओर न्यूनतम जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था तकनीकि, सामाजिक एवं देशी वित्तीय व्यवस्था (साहूकार, महाजन की वित्तीय व्यवस्था) के रूप मे ग्रामीण क्षेत्र के रूप मे देखी जाती है।

तकनीकि पिछड़ापन :- अल्पविकसित देशो मे सामान्यतः विकसित देशो की तुलना मे अत्यन्त अल्पविकसित तकनीको का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण सामान्यतः इन देशो मे पूजी उत्पाद अनुपात अधिक होता है।

अल्परोजगार एवं छिपी हुई बेरोजगारी :- अल्पविकसित देशो मे अल्परोजगार की स्थिति सामान्य रूप से पायी जाती है। अल्परोजगार से तात्पर्य पूर्ण क्षमता से कम क्षमता के साथ उत्पादन करना है। अल्पविकसित देशो मे रोजगार के अवसरो की कमी के कारण पूर्ण क्षमता से कम क्षमता के साथ रोजगार करने की सामान्य स्थिति पायी जाती है। इसके अतिरिक्त अल्पविकसित देशो मे पूर्ण बेरोजगारी की स्थिति भी सामान्य रूप से देखी जाती है। पूर्ण बेरोजगारी से तात्पर्य किसी साधन का उत्पादन प्रक्रिया से किसी भी प्रकार से योगदान न करने से है। अल्पविकसित देशो मे अल्परोजगार एवं पूर्ण बेरोजगार के अतिरिक्त अदृश्य अथवा छिपी हुई बेरोजगारी भी सामान्य रूप से पायी जाती है जिसमे साधन की सीमान्त उत्पादकता शून्य अथवा ऋणात्मक होती है।

जनसांकीय विशेषताएं :- अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओ की जनसांकीय प्रवृत्तियां सामान्यतः अनुकूलतम नही होती। इन अर्थव्यवस्थाओ मे सामान्यतः उच्च जन्म दर, उच्च अथवा निम्न मृत्यु दर, उच्च शिशु मृत्यु दर, उच्च बाल मृत्यु दर, उच्च मातृत्व मृत्यु दर, निम्न जीवन प्रत्याशा निम्न साक्षरता दर, अधिक जनसंख्या घनत्व इत्यादि जनांकिकीय प्रवृत्तियां देखी जाती है जो इन अर्थव्यवस्थाओ को विकसित अर्थव्यवस्थाओ से अलग करती है।